

## लियो तोल्स्तोय की ज़िन्दगी से कुछ सबक

लेखक : रोमन क्रिज़्नारिक

अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

आज से डेढ़ सौ बरस पहले लियो टॉलस्टॉय ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक “वार एंड पीस” (युद्ध और शांति) लिखना शुरू की थी. तमाम लोग तोल्स्तोय को 19वीं शताब्दी के महानतम उपन्यासकार के रूप में जानते हैं. पर बहुत कम ही लोग जानते हैं कि तोल्स्तोय अपने काल के सबसे क्रांतिकारी सामाजिक और राजनैतिक चिन्तक भी थे. तोल्स्तोय का जन्म एक राजसी परिवार में हुआ. 1828-1910 के लम्बे जीवनकाल में तोल्स्तोय ने अपनी अमीर पृष्ठभूमि से उपजी तमाम मान्यताओं को चुनौती दी और उन्हें नकारा. उनकी गैर-परंपरागत जीवनशैली ने पूरी दुनिया को चकित किया. तोल्स्तोय के व्यक्तिगत जीवन में आये बदलाव आज भी हमें ज़िन्दगी जीने के तमाम सबक सिखा सकते हैं.

तोल्स्तोय का जन्म रूस के एक राजसी परिवार में हुआ. परिवार के पास बहुत ज़मीन-जायदाद थी और सैकड़ों गुलाम थे. जवानी में तोल्स्तोय काफी अय्याश थे. जुए की लत में उन्होंने तमाम संपत्ति उड़ा डाली. इसका उल्लेख उनके लेख “ए कन्फेशन” में मिलता है. उन्होंने लिखा, “मैंने लड़ने के लिए लोगों को चुनौतियाँ दीं और युद्ध में लोगों की जानें लीं. मैं ताश के जुए में हारा, मैंने मजदूरों की मेहनत पर ऐश किया; एक आवारा ज़िन्दगी जी और लोगों को धोका दिया. झूठ, चोरी, व्यभिचार, दारू, हिंसा, क़त्ल ऐसा कोई जुर्म नहीं बचा जो मैंने न किया हो. उसके बावजूद लोग मेरी तारीफ करते और मेरे समकालीन मुझे एक नेक और नैतिक इंसान मानते थे. दस बरस तक मैंने पाप की जिंदगी जी.

तोल्स्तोय इस पाप के समंदर से कैसे उबरे? शायद उनकी यात्रा हमें भी एक बेहतर ज़िन्दगी जीने की राह दिखाए.

### पहला सबक: दिमाग खुला रखो

नए अनुभवों के आधार पर तोल्स्तोय अपने विचार बदलने में माहिर थे. यह कला उन्होंने 1850 में, फौज में नौकरी के दौरान सीखी. तोल्स्तोय ने क्रीमियन युद्ध लड़ा. जंग की विभीषिका झेलने के बाद तोल्स्तोय एक बहादुर सैनिक से सदा के लिए एक शांतिदूत बन गए. 1857 में उन्होंने पेरिस में एक मुजरिम को फांसी लगते देखा. कटे सर को, नीचे रखे डिब्बे में गिरने की आवाज़ को वो कभी नहीं भुला पाए. इससे उन्हें यह बिलकुल स्पष्ट हो गया कि सरकार के नियम-कानून न केवल क्रूर होते हैं, बल्कि वे अमीरों और दौलतमंदों के हितों की रक्षा करते हैं. तब उन्होंने अपने एक मित्र को लिखा, “सच तो यह है कि राज्य सरकारें गरीबों के शोषण और नागरिकों को भ्रष्ट बनाने के लिए ही बनी हैं. आइन्दा से मैं कभी कोई सरकारी नौकरी नहीं करूंगा.” तब तोल्स्तोय अराजकतावादी (अनार्किस्ट) बनने के रस्ते पर चल पड़े. ज़ार की सरकार के ज़बरदस्त विरोध के बाद उन्हें कैद में ज़रूर डाला जाता. पर क्योंकि वो एक बहुत मशहूर साहित्यकार थे, इसलिए वो बाल-बाल बच गए. तोल्स्तोय सबसे एक सवाल करते - अपनी बुनियादी और हठधर्मी मान्यतायों और पूर्वाग्रहों का दुबारा मूल्यांकन करो.

### दूसरा सबक: सहानभूति का अभ्यास करो

उन्नीसवीं सदी में तोल्स्तोय सहानभूति के सबसे महान प्रणेता थे. वो अपनी ज़िन्दगी से बिलकुल अलग, अन्य लोगों के जीवन को अनुभव करने को सदा तत्पर रहते. 1861 में गुलामी समाप्त हुई और रूस में किसानों के आन्दोलन का सैलाब उमड़ा. उसके बाद से तोल्स्तोय ने किसानों की परम्परगत पोशाख पहनना शुरू की, वो अपनी ज़मीन पर मजदूरों के साथ मिल मेहनत-मशक्कत भी करने लगे. वो खुद अपने हाथों से खेत जोतते और घरों की मरम्मत करते. राजसी व्यक्ति के लिए यह सब करना एक बहुत अहम् और क्रान्तिकारी कदम था. उनके व्यवहार में पैतृकता की बू ज़रूर थी, पर फिर भी उन्हें मजदूर-किसानों की संगत में मज़ा आता था. धीरे-धीरे वो शहरों में अपने तबके के रईसजादों और साहित्यकारों से कटने लगे. उन्होंने किसानों के बच्चों के लिए एक प्रायोगिक स्कूल भी शुरू किया जो रूसो और प्रोउधों के समतावाद और मुक्ति के विचारों पर आधारित था. तोल्स्तोय ने बतौर मास्टर खुद उस स्कूल में पढ़ाया भी. उस काल में कुछ रईस लोग भी गाँव के मजदूरों के प्रति अपनी एकजुटता व्यक्त करते थे. परन्तु तोल्स्तोय का मानना था कि गरीबों की ज़िंदगी जिए बिना, उनके जीवन की असलियत को समझ पाना असंभव था.



चित्र (1889 - इल्या रेपिन) में तोल्स्तोय अपनी कलम छोड़कर हल जोत रहे हैं. उनकी लिखने वाली मेज़ के पास ही उनकी आरी और हसिया रखा है. और फर्श पर मोची के औजार पड़े हैं.

### तीसरा सबक: दुनिया बदलो

ऊंचे तबके से आने के बावजूद तोल्स्तोय ने गरीबों की ज़िंदगी का दुःख-दर्द दूर करने के लिए ठोस कदम उठाये.

किसानों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता “अकाल” के समय साफ झलकी. 1873 में अकाल में फसल के पूरी तरह नष्ट होने के बाद तोल्स्तोय ने साल भर के लिए “एना कारेनिना” लिखने का काम स्थगित कर दिया. इस दौर में वो भूखे लोगों के लिए राहत जुटाने के काम में लग गए. उन्होंने पत्र में अपने एक रिश्तेदार को लिखा, “जिंदा लोगों से मैं खुद को कैसे अलग कर सकता हूँ. इस समय में काल्पनिक पात्रों के बारे में सोच भी नहीं सकता.” तोल्स्तोय के दोस्तों और परिवारवालों ने उन्हें पागल करार दिया. “दुनिया का सबसे महान लेखक साल भर के लिए उपन्यास लिखना भला कैसे रोक सकता है?” परन्तु लोगों के तानों को तोल्स्तोय ने पूरी तरह नज़रंदाज़ किया. वो अपनी जिद पर अड़े रहे. 1891 के अकाल में भी उन्होंने वही किया. तब उन्होंने अपने परिवार के साथ मिलकर दुनिया भर में अकाल पीड़ितों के लिए धन इकट्ठा किया और राहत शिविरों में खाना पकाया. क्या आज आप इस बात की कल्पना कर सकते - कि कोई लोकप्रिय लेखक अपना लेखन छोड़कर दो साल राहत शिविरों में काम करे?

#### चौथा सबक: सादा जीवन जीने की कला सीखो

तोल्स्तोय का सबसे बड़ा गुण उनकी पीड़ा का स्रोत भी था. उनमें “जीवन का मतलब” जानने की ज़बरदस्त ख्वाइश थी. वो खुद से हमेशा एक सवाल पूछते - कि वो क्यों और कैसे, एक सुकारत जिंदगी जियें; और फिर भला इतनी दौलत और शोहरत का क्या फायदा? 1870 में, इन सवालों पर उन्होंने इतना गहरा सोच-विचार किया, कि वो लगभग पगला गए और खुदकशी करने की कगार पर पहुँच गए. पर उसके बाद जर्मन दार्शनिक शोपेन्हौर, बुद्ध की सीखों और बाइबिल का अध्ययन कर उन्होंने इसाई धर्म के एक क्रान्तिकारी पक्ष को अपनाया. बाद में उन्होंने सभी संगठित धर्मों को नकारा - उसमें वो रूढ़िवादी चर्च भी शामिल था जिसमें वो खुद पले-बढ़े थे. उसके बाद उन्होंने एक आध्यात्मिक और सादगी की जीवनशैली अपनाई जिसमें बहुत कम भौतिक चीज़ों से जिंदगी जीना संभव था. उन्होंने लोगों को सादगी और स्वावलंबन की जिन्दगी जीने के लिए, आदर्श कम्युनिटीज बनाने की प्रेरणा दी. यहाँ सारी जायदाद पर समुदाय का हक होता. ऐसी “तोल्स्तोय” कम्युनिटीज पूरी दुनिया में रची गयीं. 1910 में दक्षिण अफ्रीका में जब गांधीजी ने अपना आश्रम बनाया तब उन्होंने उसे “तोल्स्तोय-फार्म” का नाम दिया.

#### पांचवा सबक: सादा जीवन जीने की कला सीखो

तोल्स्तोय द्वारा सादगी की जिन्दगी बिताने में उन्हें तमाम संघर्षों और विरोधाभासों का सामना करना पड़ा. एक ओर वो दुनिया को प्रेम का सन्देश सिखाते, परन्तु दूसरी ओर हमेशा अपनी पत्नी से लड़ते-झगड़ते. समतावाद में विश्वास करने के बावजूद वो अपनी दौलत और विशेष अधिकारों को कभी भी पूरी तरह से नहीं त्याग पाए. वो लम्बी उम्र तक अपने आलीशान पुश्तैनी मकान में, नौकरों-चाकरों के साथ ही रहे. जब उन्होंने अपनी जागीर और दौलत को किसान-मजदूरों में बाँटने की सोची, तो पत्नी और बच्चों ने उसका घोर विरोध किया. उससे तोल्स्तोय को अपना इरादा बदलना पड़ा. पर 1890 में, उन्होंने परिवार के बहुत विरोध के बावजूद अपनी तमाम कित्तियों की कॉपीराइट्स को त्याग दिया. इससे उन्हें आर्थिक रूप से बहुत नुकसान हुआ. आखिरी दिनों में जब पत्रकार और लेखक लम्बी दाढ़ीवाले महात्मा को श्रद्धांजलि देने के लिए आते, तो वे दुनिया के सबसे मशहूर लेखक को अन्य मजदूरों के साथ लकड़ी काटते या फिर अपने लिए नए जूते सिलते हुए पाते. धन-दौलत की दुनिया में पैदा होने के बावजूद, तोल्स्तोय अपनी जिन्दगी में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन लाये वो वाकई में तारीफे-काबिल थे.

### छठवां सबक: अपना सामाजिक दायरा बढ़ाओ

तोल्स्तोय की ज़िन्दगी की सबसे अहम् सीख क्या है? कि हम अपनी मान्यताओं और पूर्वाग्रहों को चुनौती दें और दुनिया को एक नए अंदाज़ से देखने का नजरिया पैदा करें. इसके लिए ऐसे लोगों से मिलें और सम्बन्ध बढ़ाएं जिनके विचार और जीवनशैली हमसे बिलकुल भिन्न हों. इसलिए तोल्स्तोय ने मास्को के अमीर लोगों का साथ छोड़ा और अपना अधिकतम समय ज़मीन से जुड़े किसान-मजदूरों के साथ बिताया. उन्होंने अपनी पुस्तक "रेसुर्रैक्शन" में लिखा कि ज़्यादातर लोग - चाहे वो पूंजीपति, राजनेता या फिर चोर ही क्यों न हों, सभी को अपनी मान्यताओं और जीवनशैली पर पूरा यकीन और नाज़ होता है. "अपने विचारों और जीवनशैली को बरकरार रखने के लिए," तोल्स्तोय ने लिखा, "यह लोग हमेशा अपने जैसे सोच वाले लोगों के साथ ही रहते हैं."

अगर हम अपनी मान्यताओं और पूर्वाग्रहों को चुनौती देना चाहते हैं तो हमें तोल्स्तोय के रास्ते पर चलना पड़ेगा. इसके लिए हमें उन लोगों की संगत में रहें जिनके विचार और मान्यताएं हमसे बिलकुल अलग और भिन्न हों. हमें अपने चारों ओर खुद बनाये गोले की परिधि से परे की यात्रा करनी पड़ेगी.